www.AtmaDharma.com

श्री दिगम्बर
जैन सिद्ध क्षेत्र
सोनागिर-दर्शन

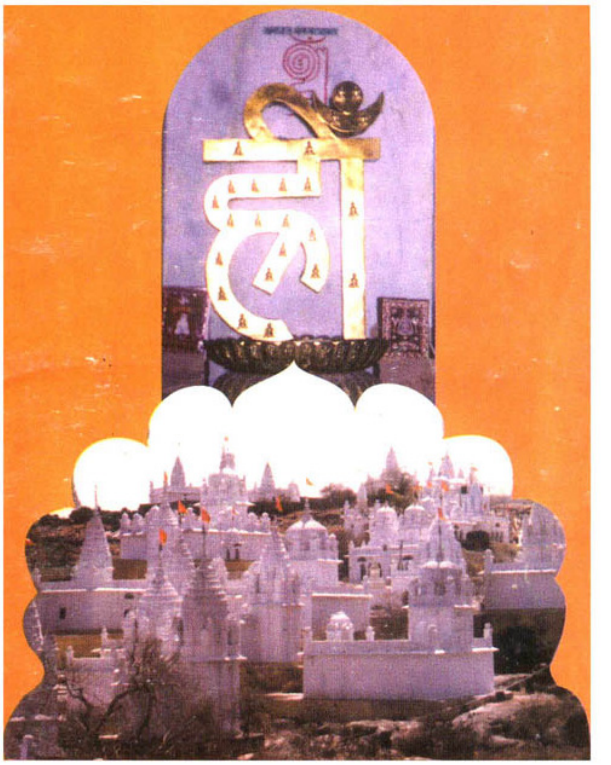

श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट,
सोनागिर

आचार्य कुन्दकुन्द नगर,
सिद्धक्षेत्र सोनागिर–455685
जिला दतिया [मध्य प्रदेश]
कोन : 07522-262307
व 262310

सोनागिर-एक परिचय

श्री सोनागिर दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र प्राचीन काल से अवस्थित है। यहां भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी का १७ बार समवशरण आने का उल्लेख शास्त्रो में मिलता है। निर्वाण काण्ड के अनुसार इस पर्वत पर श्री नंग, अनंग, चिन्तागति, पूर्णचन्द अशोक सेन, श्री दत्त व स्वर्ण भद्रादि साढे पांच करोड़ दिगम्बर मुनियों ने तप व आत्म साधना कर सिद्ध पद प्राप्त किया है। श्री शुभचन्द्रजी मुनि एवं साधु श्री भर्तहरि की यह साधना स्थली रही है। श्रावक–जन इस तीर्थ क्षेत्र की भावपूर्ण वन्दना, अर्चना व पूजन करके अपने को धन्य मानते हैं और ध्यान, स्वाध्याय आदि के द्वारा सदाचार संयम पालते हुए अपने मोक्षमार्ग को प्रशस्त करते हैं।

सोनागिर तीर्थराज का माहात्म्य

सोनागिर जी का प्राचीन नाम स्वर्णगिरि अथवा श्रमणगिर भी विख्यात रहा है। यहां नयनाभिराम सुन्दर पहाड़ी पर पंक्तिवद्ध ७७ शिखरबन्द मंदिर हैं। जिनमें कुल मिलाकर ८२ खड्गासन व ८५ पद्मासन जिन प्रतिमाएं विराजमान हैं। यह पहाडी १३२ पकड़ में फैली है। प्रत्येक मंदिर पर क्रम संख्या अंकित है। पूरी वन्दना में लगभग २ घंटे मात्र लगते हैं।

मंदिर क्रमांक–५७ में संवत १३३५ में प्रतिष्ठित भगवान चन्द्रप्रभ की ११ फीट उतंग खड़गासन उसी पर्वत के पाषाण पर उकेरी गई अति मनोज्ञ व नयनाभिराम प्रतिमा विराजमान है जिसके दर्शन मात्र से आत्म–शांति मिलती है और वन्दनार्थी दर्शनकर अपनी आत्मा में रमणना का पुरुषार्थ कर भाव शुद्ध करता है।

समीप में ही भगवान शीतलनाथ एवं भगवान पार्श्वनाथ की ८ फीट उतंग खड़गासन प्रतिमाएं पृथक वेदियों में विराजमान हैं। मंदिर के बाहर बीच में १० फीट उतंग भगवान बाहुबली व आजु–बाजु में ८ फीट उतंग नंग व अनंग स्वामी की प्रतिमाएं पृथक–पृथक शिखरवंद वेदियो में विराज रही हैं। समीप ही आंगन में २४ तीर्थंकरो के छोटे मंदिर एवं बीचोंबीच ४३ फीट उतंग आकर्षक मानस्तम्भ बना हुआ है। पास में ही भगवान चन्द्रप्रभ के समवशरण की दोमंजिला सुन्दर रचना है। आगे चलकर बजनी शिला मिलती है जिसकी प्रतिध्वनि बहुत ही कर्णप्रिय है। उसके पास ही एक नारियल कुण्ड है जिसमें हर समय जल रहता है। पर्वत पर ३० फीट उतंग कीर्ती स्तम्भ के अतिरिक्त दिगम्बर जैन मुनिराजो की २१ छतरियां एवं साधना हेतु अनेक छोटी–बड़ी गुफाएं भी बनी हैं। पर्वतराज पर एक तालाब व ७ जलकुण्ड भी हैं।

पर्वतराज की तलहटी

तलहटी में यात्रियों की सुविधार्थ अनेक छोटी–बड़ी धर्मशालाएं बनी हैं। जिनमें १७ प्राचीन शिखर बद्ध मंदिरों सहित कुल २७ मंदिरों में भव्य जिन प्रतिमाएं विराजमान है। सभी मंदिरों पर क्रमांक संख्या है। मंदिर संख्या १४ द्वारा पर्वतराज की व्यवस्था तीर्थक्षेत्र प्रबंध समिति के द्वारा की जाती है। पूरे पर्वतराज की परिक्रमा हेतु सुव्यवस्थित मार्ग बना हुआ है जिससे वन्दनार्थी बड़े भक्ति–भाव पूर्वक परिक्रमा करके पुण्य लाभ लेते हैं।

परमागम मंदिर एवं श्री १००८ चन्द्रप्रभ मंदिर

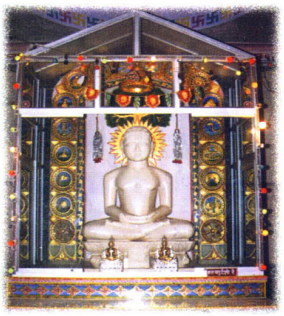

परमागम मंदिर के विशाल प्रांगण में चारों ओर मार्बल की दीवारों पर श्री कुन्दकुन्द आचार्य द्वारा रचित पंच परमागम की मूल गाथाएँ, द्रव्य संग्रह, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, तत्वार्थ सूत्र जी आदि उकेरा जाकर अमिट रूप से अंकित है। इस मंदिर में भगवान चन्द्रप्रभ की ५.५ फीट उतंग पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। इस मंदिर में पूजन, पाठ विधान महोत्सव एवं हाल में प्रतिदिन दोनों समय प्रातः एवं सायंकाल प्रवचन की व्यवस्था है।

श्री कुन्दकुन्द नगर में विशाल श्री १००८ भगवान बाहुबली मंदिर

श्री सोनागिर में प्रवेश करते ही पुलिस चौकी के सामने विशाल धर्मशाला से लगा नव निर्मित विशाल प्रांगण में २५ फीट ऊँचाई पर १८ फीट उतंग श्री भगवान बाहुबली स्वामी के दूर से ही दर्शन होने लगते हैं, वहीं स्थान कुन्दकुन्द नगर के नाम से विख्यात है। इस मूर्ति के दोनों ओर लोहे की स्थाई सीड़ियाँ, रेलिंग सहित लगी होने से, साथ ही ३० × ३० फीट का मार्बल युक्त आँगन के सामने विशाल मूर्ति की छटा मन को सहज ही मोह लेती है, मन वहाँ से उठने को नहीं करता है। प्रतिदिन सायंकाल ६:३० से ७:३० बजे तक यहाँ सामूहिक बाहुबली भक्ति होती है।

पंचतीर्थ रचना

वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों के निर्वाण स्थल (पंचतीर्थ) की सुन्दर रचना एक ही स्थान पर पीसागन (राज.) के श्री नेमीचन्द जी पहाड़िया परिवार ने चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग कर साधर्मियों को अपूर्व अवसर प्रदान किया है।

१. सम्मेद शिखर की रचना में भगवान चन्द्रप्रभ व भगवान पार्श्वनाथ का मन्दिर एवं २० टोंकों पर तीर्थंकरों के चरण चिन्ह विराजमान किये गये हैं।

२. कैलाशपर्वत की रचना में भगवान आदिनाथ का मन्दिर है।

३. गिरनार पर्वत की रचना में भगवान नेमिनाथ का मन्दिर है।

४. चम्पापुर–मन्दारगिरी की रचना में भगवान वांसुपूज्य का मन्दिर व चरण चिन्ह स्थापित किये हैं।

५. पावापुर जल मन्दिर की रचना में भगवान महावीर का मन्दिर है।

श्री बाहुबली ध्यान मंदिर

बीचों बीच में २५ फीट ऊँचें, ३० फीट चौड़े, ३० फीट लम्बे विशाल भवन में ध्यान मन्दिर की ऐसी सुन्दर रचना की है जिसमें हर मौसम में अनुकूलता पूर्वक साधर्मीजन निराकुल बैठकर, समायिक, जाप्य, चिन्तन मनन एवं एकाग्रता पूर्वक ध्यान करते है। बाह्य अवलम्बन हेतु सामने ही ४.५ फीट ऊँचा स्वर्णमयी धातु का "ह्री" बनाया गया है, जिसके ऊपर चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमायें हैं। उसके पीछे व ऊपर ध्यान के मंत्र "शुद्ध चिद्रुपोऽम्" आदि लिखे हुये हैं। दूसरी दीवार पर ४७ शक्तियाँ चित्र सहित लिखी हुई हैं।

सरस्वती भवन एवं सत् साहित्य विक्रय केन्द्र

पंचतीर्थ परिसर में प्रवेश करते ही दाँई ओर दो मन्जिला भवन श्री सरस्वती भवन एवं साहित्य विक्रय केन्द्र के नाम से स्थापित हैं। इसमें दोनों मन्जिलों में चारों ओर लोहे की अल्मारियों में चारो अनुयोग के अनेंको ग्रन्थ स्वाध्याय एवं विक्रय हेतु उपलब्ध हैं। यहाँ स्थाई रूप से रहने वाले व बाहर से समय–समय पर पधारने वाले यात्रीगण शोध हेतु एवं स्वाध्याय हेतु ग्रन्थों का पूरा–पूरा उपयोग करते हैं।

विद्वत अतिथि गृह

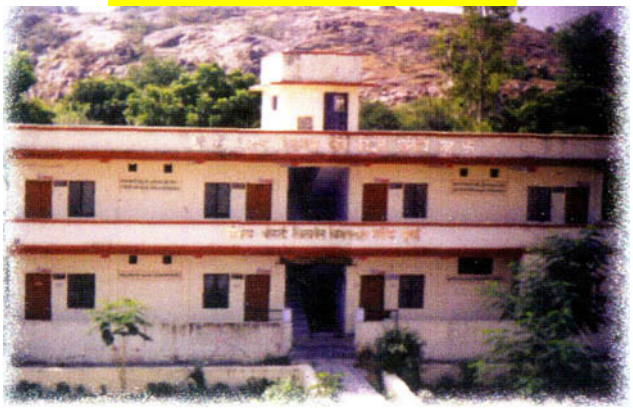

विद्वानों के निवास हेतु "विद्वत् अतिथि गृह" में पृथक से पूर्ण सुविधा सहित ७ फ्लेंटों की व्यवस्था है। सोनागिर जी में स्थाई रूप से अनेक विद्वान रहते है, उनके एवं बाहर से पधारे अनेक विद्वानों द्वारा प्रतिदिन नियमित तीनों समय चारों अनुयोग के ग्रन्थों के माध्यम से प्रातः ८.१५ से ९.१५ मध्याह्न ३.५ से ४.५ और रात्रि ८ से ९ तक प्रवचन होते हैं।

धर्मार्थ औषधालय

आचार्य कुन्दकुन्द नगर में स्थाई रूप से अनुभवी वैद्य द्वारा आयुर्वेदिक पद्धति से प्रातः ८ से १२ बजे एवं मध्यान्ह २ से ५ बजे तक निःशुल्क निदान कर उपचार किया जाता है, जिसका स्थायी निवासी, यात्रीगण एवं ग्रामीण जनता पूरा–पूरा लाभ लेती हैं। औषधालय के लिये ४ कमरों युक्त पृथक से भवन बनाया गया है, जो कुन्दकुन्द नगर के प्रवेश द्वार के पास ही स्थित है।

शुद्ध श्रावक भोजनालय

सोनागिर जी में यात्रियों के लिये शुद्ध भोजन की समुचित व्यवस्था के लिये कुन्दकुन्द नगर में बड़ा हॉल (जिसमें ८० व्यक्ति डायनिंग टेबिल, कुर्सी पर बैठकर एक साथ भोजन करते हैं) रसोई घर, दो स्टोर रुम, एक बर्तन आदि सफाई रुम एवं एक वेटिंग रुम सहित श्रावक भोजनशाला का विशाल भवन है। प्रतिदिन चलने वाले इस भोजनाशाला में जैन नियमानुसार यात्रीगण शुद्ध भोजन करते है। भोजन प्रारम्भ होने के समय से २ घंटे पूर्व सूचना देने से सहज व्यवस्था हो जाती है।

आधुनिक सुविधायुक्त गेस्ट हाउस

दो ब्लोकों में ४–४ गेस्ट हाउस निर्मित हैं। प्रत्येक में। हॉल, २ शयन कक्ष, १ किचिन, २ प्रसाधन एवं दोनों तरफ गेलरी अट्चड है, जिसका उपयोग निर्माता की अनुपस्थिति में यात्रीगण करते हैं। प्रत्येक गेस्ट हाउस में ४ पलंग, ६ गद्दे–तकिये, टेबिल–कुर्सी, अलमारी, पंखे, कूलर फिट हैं। जहाँ साधर्मी जन शांति पूर्वक रहकर आत्म साधना करते है।

सुविधा सम्पन्न श्री कुन्दकुन्द निलय

यह दो मन्जिला आकर्षक भवन है। जिसकी प्रत्येक मन्जिल में १६–१६ फ्लेट हैं। हर फ्लेट में एक बड़ा कमरा, किचिन,लेट–बाथ, देबिल–कुर्सी, कूलर, गद्दे, तकिये, पलंग बाल्टी, जग, गिलास आदि की सुविधाएं हैं। फ्लेट निर्माता के प्रवास के अलावा यात्रियों के निवास हेतु सदैव उपलब्ध रहते हैं। इसके अतिरिक्त १२ फ्लेट भोजनशाला के ऊपर यात्रियों के निवास हेतु निर्मित हैं।

विशेष कार्यक्रम हेतु यहां एक आकर्षक मीटिंग हॉल है। बस के यात्रियों के लिये बड़ा हॉल श्री अमृत विश्रुति कक्ष है।

इस प्रकार आधुनिक आवास व्यवस्था में कुन्दकुन्द नगर सदैव आपकी सेवा में तत्पर है।

दैनिक मांगलिक कार्यक्रम

समय	कार्यक्रम	स्थान
प्रात : ५:०० से ५:४५	सामायिक पाठ जाप्य,	आदि ध्यान मन्दिर में
प्रात : ६:०० से ८:००	प्रक्षाल, पूजन एवं सिद्ध क्षेत्र की वंदना	
प्रात : ८:१५ से ९:१५	वचन	परमागम मन्दिर में
मध्याह्न : २:३० से ३:३०	सी.डी. टेप प्रवचन	सरस्वती भवन में
मध्याह्न : ३:३० से ४:३०	प्रवचन	रस्वती भवन में
सायंकाल : ६:३० से ७:३०	भक्ति	परमागम मंदिर व बाहुबली मंदिर में
रात्रि : ७:३० से ९:००	प्रवचन	रमागम मन्दिर में

आंशिक कार्यक्रम परिवर्तन, यथा समय सूचित कर दिया जाता है।

श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट सोनागिर के संरक्षकगण एवं ट्रस्टियों के नाम एवं पते

परमसंरक्षक – **जैनरत्न वाणीभूषण पं. ज्ञानचंद्र जैन,** सोनागिर

फोन : ०७५२२–२६२३१० विदिशा ०७५९२–२३२२३४

संरक्षक – **श्री नेमीचंद जैन, पहाड़िया,** पीसागन

www.AtmaDharma.com

श्री प्रकाशचंद्र जैन, पोद्दार, सिरसागंज

अध्यक्ष – **श्री पूनमचंद्र जैन,** सेठी, अरिहन्त निवास एम. २३१ ग्रेटर कैलाश, पार्ट–२, नई दिल्ली–४८ फोन : [निवास] ०११–२९२१८८१८, २९२२४३७३ [ऑफिस] २६३८७०९१–९४

महामंत्री – **श्री मांगीलाल जैन पहाड़िया**

"वैभव' ५८२ एम. जी मार्ग कल्याण भवन परिसर, इन्दौर, [म. प्र.] फोन : [निवास] ०७३१–२५३३१८६, [ऑफिस] : ५०८२६३४, २५४८०८६ मोबाईल : ९४२५०५४२८०

कोषाध्यक्ष – **श्री केशवदेव जैन**

५, आनन्दपुरी ट्रांसपोर्ट नगर, कानपुर, [उ. प्र.] फोन : [निवास] ०५१२–२६४४४०९, २६०७६७४ [ऑफिस] : २६९१२०५, २६९११९३

ट्रस्टीगण – **श्री निर्मलकुमार जैन,** एडवोकेट, नया बाजार चौराहा, ग्वालियर, [म. प्र.] फोन : [निवास] : ०७५१–२३२३६१६, २३२०८२४

श्री मोतीलालजैन, सर्राफ, भगवानमहावीर चौक पो. खैरागढ़, जिला–राजानंदगांव, छत्तीसगढ़ फोन : [निवास] ०७८२०–२३४४४४७

श्री केशरीमल जैन, पाटनी, ग्वालियर श्री कुन्दकुन्द नगर, सोनागिर, फोनः ०७५२२–२६२५२२, ग्वालियर फोन : ०७५१–२३३५७४९

श्री डा. मुकेश जैन 'तन्मय' शास्त्री ज्ञानानंद निवास, किला अन्दर, पो. विदिशा, [म. प्र.] फोन : [निवास] ०७५९२–२३२२३४, २३६८६१ [ऑफिस] २३००२४

श्री माणकचंद जैन, लुहाडिया, सी २/५४, एस. डी. ए. हौज खास, नई दिल्ली – ११००१६ फोन : [निवास] ०११–२६८६१३३९, २६९६३३९९

श्री बृजमोहन लाल, पोद्दार, ६ प्रशांत भवन, गोविन्दपुरी, रानीपुर रोड़ हरिद्वार, [उ. प्र.]–२४९४०१ फोन : [निवास] ०१३३४–२२६१२३, २२२९८० [ऑफिस] : २२४०३८, २२६७०८

श्री दीपचंद जैन, पट्ठा, बाकलीवाल महावीर मार्ग खातेगांव, जिला देवास, [म. प्र.] फोन : ०७२७४–२३२३४२, २३२२७२

स्थायी रूप से सोनागिर रहने वाले विद्वान

वाणीभूषण पं. श्री ज्ञानचन्द जैन, विदिशा	फोन : २६२३१०
प्रतिष्ठाचार्य पं. श्री पूरन चन्द जैन, मौ	फोन : २६२३७२
पण्डित श्री केशरीमल पाटनी, ग्वालियर	फोन : २६२५२२
पण्डित विनोद कुमार जैन, गुना	फोन : २६२३७२
पं. श्री कमलचन्द गंगवाल, ग्वालियर	फोन : २६२२७१

भजन गायक श्री बसन्त कुमार बड़जात्या, ग्वालियर आदि

विद्वानों के अलावा अनेकों परिवार निवृति लेकर सोनागिर जी में रहते हैं।

सोनागिर पहुंचने के साधन

ग्वालियार–झांसी के बीच स्थित 'सोनागिर' मध्य रेलवे का स्टेशन है। यहां पर सभी सवारी गाड़ियां और अमृतसर–विलासपुर छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस नियमित रूप से रुकती है। गाड़ी के समय क्षेत्र की बस सदैव उपलब्ध रहती है। विशेष पर्व व मेलों के समय अन्य एक्सप्रेस गाड़िया भी यहां रुकती हैं तथा अनेक एक्सप्रेस व मेल गाड़ियां दतिया रुकती हैं। दतिया से बस या आटो द्वारा सोनागिर जी पहुंचा जा सकता है।

ग्वालियार–झांसी रोड पर रेलवे स्टेशन से एक किलो मीटर दूर तिराहे पर बस छोड़ती हैं। वहां से भी दिन के समय सोनागिर के लिए सवारी मिल जाती है।

श्री महावीर जी से सोनागिर के लिए प्रतिदिन बस आती एवं जाती हैं।

श्री कुन्दकुन्द नगर के विकास हेतु विविध योजनाओं में आपका सहयोग अपेक्षित है

आवश्यक योजनाएँ	सहयोग राशि
१. जल योजना [पाईप लाइन, टंकी, बोरिंग]	पांच लाख रुपये
२. ध्यान केन्द्र के सामने ५१ फीट ऊँचा मान–स्तम्भ	पंद्रह लाख रुपये

३. ध्यान केन्द्र के सामने वाले मैदान पर मार्बल का फर्श तीन लाख रुपये

४. कुन्दकुन्द नगर की रोड सीमेन्टेड बनाने हेतु डेढ़ लाख रुपये

५. वाटर फिल्टर प्लान्ट [कम्पलीट] सवा लाख रुपये

६. बालकों के लिये खेल–कूद उद्यान उपकरण बीस हजार रुपये

७. [भोजनालय] ध्रुवफण्ड हेतु सहयोग ग्यारह हजार रुपये

८. औषधालय हेतु स्थाई ध्रुव फण्ड में ग्यारह हजार रुपये

९. ज्ञानप्रचारार्थ ज्ञानदान स्वरूप सहयोग राशि पांच हजार रुपये

[ध्रुव फण्ड राशि प्रदाता के फोटो संबंधित स्थान पर लगाये जाते है।]

अपने जीवन के विशेष अवसरों की तिथि को चिर स्थाई बनाने हेतु दान राशि अवश्य लिखायें।

– धमार्थ औषधालय हेतु एक दिन की राशि :– पांच सौ रुपये

– पंच तीर्थ स्थाई पूजन तिथि एक दिन की राशि :– पांच सौ रुपये

– परमागम मन्दिर स्थाई पूजन तिथि एक दिन की राशि तीन सौ रुपये

संस्था के विकास हेतु आपके सुझाव एवं मार्ग दर्शन कार्यालय में अवश्य लिखायें। क्षेत्र पर अपने धन का सद्पयोग कर लाखों यात्रियों को धर्म मार्ग में लगाने की प्रेरणा प्रदान करते हुए, सातिशय पुण्य लाभ प्राप्त करें।

क्षेत्र पर हमारी व्यवस्था से यदि संतुष्ट हैं तो औरों से कहें। कोई त्रुटि मिले तो हमें अवश्य अवगत कराएं। आपके सुझावों का सदैव स्वागत है

निवेदक :

श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट, सोनागिर

आचार्य कुन्दकुन्द नगर, सोनागिर–४५५६८५

जिला दतिया [म.प्र.]

फोन : ०७५२२–२६२३०७, २६२३१०